सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुर्सलात

भेजे जाने वाले

पूरा सफ़र — हवाएँ, तंबीह, और बार बार दोहराई गई बर्बादी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 77 • 50 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वल्-मुर्सलाति 'उर्फ़ा
1. क़सम है लगातार भेजे जाने वालों की।

इन्नमा तू'अदून ल-वाक़ि'
7. बेशक जिसका तुमसे वादा है वो होने वाला है।

वैलुंय्-यौम-इज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन
15. उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी है।

अ लम नज्'अलिल्-अर्ज़ किफ़ाता
25. क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया?

इन्नल्-मुत्तक़ीन फ़ी ज़िलालिंव्-व 'उयून
41. बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे।

फ़-बि-अय्यि हदीसिम्-ब'अदहू यु'मिनून
50. तो इसके बाद वो किस बात पर ईमान लाएँगे?

पाँच क़समें, एक यक़ीन

बेटा, यह सूरह ऐसे शुरू होती है जैसे कोई तूफ़ान शुरू होता है — पाँच तेज़ क़समों के साथ, हर एक हरकत का एक झोंका: 'वल्-मुर्सलाति 'उर्फ़ा — क़सम है उन की जो लगातार भेजे जाते हैं — फ़ल्-'आसिफ़ाति 'अस्फ़ा — और उन हवाओं की जो शिद्दत से चलती हैं — वन्-नाशिराति नश्रा — और उन की जो फैला देती हैं — फ़ल्-फ़ारिक़ाति फ़र्क़ा — और उन की जो साफ़ फ़र्क़ कर देती हैं — फ़ल्-मुल्क़ियाति ज़िक्रा — और उन की जो नसीहत डाल देती हैं — 'उज़्रन औ नुज़्रा — हुज्जत क़ाइम करने को या तंबीह के तौर पर।'

उलमा ने इन क़समों की दो तरह तफ़्सीर की है, बेटा, और दोनों ख़ूबसूरत हैं। ये हवाओं की तरफ़ इशारा हो सकती हैं — लगातार भेजी गई, ज़ोर से चलती, बादलों को फैलाती — और फ़रिश्तों की तरफ़, जो भेजे जाते हैं, जो सच और झूट के दरमियान फ़र्क़ करते

हैं, और जो रसूलों तक वही पहुँचाते हैं।

और क़समों को बंद करने वाला जुमला देखिए: "उज़्रन औ नुज़्रा' — हुज्जत के तौर पर या तंबीह के तौर पर। बेटा, दो लफ़्ज़ों में वही का पूरा मक़सद। ये 'उज़्र' बन कर आती है — ताकि कोई अल्लाह के सामने खड़ा हो कर ये न कह सके कि 'मुझे बताया ही नहीं गया'; और 'नुज़्र' — एक तंबीह, ताकि जो चाहे अभी वक़्त रहते लौट आए। हर नसीहत जो आप तक पहुँचती है, बेटा, इन्हीं दो में से एक है: एक रहमत जो आपको बचा ले, या एक दलील जो आपके ख़िलाफ़ पढ़ी जाएगी।

और ये सारी क़समें किस लिए? एक मुख़्तसर जवाब: 'इन्नमा तू'अदून ल-वाक़ि' — बेशक जिसका तुमसे वादा किया गया है वो होने वाला है।' पाँच क़समें, बेटा — और फिर एक वाहिद, पुर-सुकून जुमला।

दस बार: झुठलाने वालों के लिए बर्बादी

फिर सूरह उस दिन के आने का बयान करती है: 'फ़-इज़न्-नुजूमु तुमिसत — तो जब सितारों की रौशनी मिटा दी जाए, व इज़स्-समा-उ फ़ुरिजत — और जब आसमान फाड़ दिया जाए, व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त — और जब पहाड़ उड़ा दिए जाएँ, व इज़र्-रुसुलु उक़्क़िततत — और जब रसूलों का वक़्त मुक़र्रर किया जाए।'

'लि-अय्यि यौमिन उज्जिलत — किस दिन के लिए उन्हें मोहलत दी गई थी? लि-यौमिल्-फ़स्ल — फ़ैसले के दिन के लिए। व मा अद्राक मा यौमुल्-फ़स्ल — और आपको क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?'

और फिर वो तिकरार शुरू होती है — एक ऐसी लाइन जो इस सूरह में दस बार चोट करेगी, जैसे निहाई पर हथौड़ा: 'वैलुंय्-यौम-इज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन — उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी!'

बेटा, ग़ौर कीजिए किसे धमकी दी जा रही है: 'गुनहगारों' को नहीं, 'कमज़ोरों' को नहीं — मुकज़्ज़िबीन को, उन लोगों को जो सच को झूट कहते हैं। क्योंकि एक गुनहगार गुनाह कर के रो सकता है और लौट आ सकता है; मगर जो पूरे मामले को झूटा क़रार

दे देता है, उसने वो पुल ही जला दिया जिस पर चल कर उसे वापस आना था।

और अल्लाह उन्हें तारीख़ की तरफ़ इशारा कर के समझाते हैं: 'अ लम नुह्लिकिल्-अव्वलीन — क्या हमने पहलों को हलाक नहीं किया? सुम्म नुत्बिउहुमुल्-आख़िरीन — फिर हमने बाद वालों को उनके पीछे लगा दिया। कज़ालिक नफ़्अ'लु बिल्-मुज्रिमीन — हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं।' बेटा, खंडरात दलीलें हैं। जा कर देखिए उन लोगों का क्या बचा जो अपने आप को दाइमी समझते थे।

आपका अपना जिस्म ही दलील है

और फिर, बेटा, क़ुरआन वो करता है जो वो दोबारा ज़िंदा होने के मुनकिर के साथ हमेशा करता है — उसकी तवज्जोह उसी की तरफ़ मोड़ देता है: 'अ लम नख़्लुक़्कुम मिम्-मा-इम्-महीन — क्या हमने तुम्हें एक हक़ीर पानी से नहीं बनाया? फ़-ज'अल्नाहु फ़ी क़रारिम्-मकीन — फिर हमने उसे एक महफ़ूज़ ठिकाने में रखा — इला क़दरिम्-म'लूम — एक मुक़र्रर, मालूम मुद्दत के लिए। फ़-क़दर्ना फ़-नि'मल्-क़ादिरून — फिर हमने उसका अंदाज़ा मुक़र्रर किया — और हम क्या ख़ूब अंदाज़ा मुक़र्रर करने वाले हैं!'

बेटा, उस सफ़र को देखिए जिसे अल्लाह नुमायाँ कर रहे हैं: एक रद्द की हुई, बे-क़ीमत चीज़ से, एक महफ़ूज़ कमरे तक, एक ठीक वक़्त पर होने वाली नशो-नुमा तक, एक चलते, बोलते, बहस करते इंसान तक। और जिस ज़ात ने वो पूरा अमल चलाया, उसी इंसान के मुँह से उन्हें कहा जा रहा है: आप मुझे वापस नहीं ला सकते।

फिर आपके पाँव तले एक निशानी: 'अ लम नज्'अलिल्-अर्ज़ किफ़ाता — क्या हमने ज़मीन को किफ़ात नहीं बनाया — एक ऐसा बर्तन जो समेट लेता है — अह्या-अंव्-व अम्वाता — ज़िंदों और मुर्दों के लिए?'

बेटा, 'किफ़ात' वो बर्तन है जो चीज़ों को अपने अंदर खींच लेता है। वही ज़मीन आपको ज़िंदगी में उठाए रखती है — आपका घर, आपका खाना, आपके क़दम थामे हुए — और मौत में आपको क़ुबूल कर लेती है। ये आपका फ़र्श भी है और आपका आख़िरी बिस्तर भी। और ज़्यादातर लोग इस पर रोज़ाना चलते हैं, एक बार भी ये सोचे बग़ैर कि वो

अपने ही मुस्तक़बिल के कमरे की छत पर चल रहे हैं।

'व ज'अल्ना फ़ीहा रवासिय शामिख़ात — और हमने उसमें बुलंद, मज़बूती से गाड़े हुए पहाड़ रखे — व अस्क़ैनाकुम मा-अन फ़ुरात — और तुम्हें मीठा पानी पिलाया।' बेटा, ग़ौर कीजिए: 'फ़ुरात' — मीठा, पीने के लायक़। समुंदर वसीअ हैं मगर पीने के क़ाबिल नहीं; वो मीठा पानी जो आपको ज़िंदा रखता है, एक सोच-समझ कर दिया गया, अलग तोहफ़ा है।

एक ऐसा साया जिसमें ठंडक नहीं

फिर सूरह झुठलाने वालों का अंजाम इंतिहाई बारीकी वाली तस्वीरों से बयान करती है: 'इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून — चलो उस चीज़ की तरफ़ जिसे तुम झुठलाते थे! इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन ज़ी सलासि शु'अब — चलो एक तीन शाख़ों वाले साये की तरफ़ — ला ज़लीलिन — जो ठंडक न दे — व ला युग़नी मिनल्-लहब — और शोले से कुछ काम न आए।'

बेटा, क्या होला देने वाली तस्वीर है: एक साया जो साया न दे। सेहरा में साया ज़िंदगी है, राहत है, बचाओ है। यहाँ, धुआँ तीन शाख़ों में ऊपर उठता है और पनाह की तरह लगता है — और कुछ नहीं देता। इस दुनिया का हर झूटा सहारा उस एक आयत में बयान है: वो पैसा जो हमें बचाने वाला था, वो मर्तबा जो हमें महफ़ूज़ करने वाला था, वो ताल्लुक़ात जो हमें बचा लेने वाले थे। ऐसा साया जो ठंडक न दे।

'इन्नहा तर्मी बि-शररिन कल्-क़स्र — बेशक वो क़िले जितने बड़े शोले फेंकती है — क-अन्नहू जिमालतुन सुफ़्र — गोया वो पीले ऊँट हों।' क़िले जितनी बड़ी चिंगारियाँ, बेटा — उस आग की एक ही चिंगारी उन घरों से बड़ी है जिन्हें बनाने में हम अपनी ज़िंदगी लगा देते हैं।

'हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून — ये एक ऐसा दिन है जब वो नहीं बोलेंगे — व ला यु'ज़नु लहुम फ़-य'तज़िरून — न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वो उज़्र पेश करें।' बेटा, इस दुनिया में हर ग़लत करने वाले के पास एक तौजीह तैयार होती है; ज़ुबान बहानों में तेज़ होती है। उस दिन, बोलने की इजाज़त छीन ली जाएगी। तो बोलने का जो वक़्त

आपके पास अभी है उसे तौबा के लिए इस्तेमाल कीजिए, बहानों के लिए नहीं।

'फ़-इन कान लकुम कैदुन फ़-कीदून — तो अगर तुम्हारे पास कोई चाल है तो मेरे ख़िलाफ़ चल लो!' हर साज़िश करने वाले के लिए एक चैलेंज, बेटा, उस ज़ात की तरफ़ से जिसकी तदबीर से बचा नहीं जा सकता।

साये और चश्मे — और एक तल्ख़ तज़ाद

और फिर, इस सारी तंबीह के बीचो-बीच, सूरह दूसरी मंज़िल की तरफ़ एक खिड़की खोलती है: 'इन्नल्-मुत्तक़ीन फ़ी ज़िलालिंव्-व 'उयून — बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे — व फ़वाकिह मिम्-मा यश्तहून — और उन फलों में जिनकी वो ख़्वाहिश करें।'

बेटा, तज़ाद देखिए: अभी अभी एक ऐसे साये का ज़िक्र हुआ जो ठंडक नहीं देता — और यहाँ असली साये हैं, बहते चश्मों के साथ। वही लफ़्ज़ 'ज़िल्ल', दो बिल्कुल मुख़्तलिफ़ अंजाम।

'कुलू वश्रबू हनी-अम्-बिमा कुन्तुम त'अ्मलून — खाओ और पियो, मज़े से, उस के बदले जो तुम करते थे।' बेटा, 'हनी-अन' — ख़ुशगवार, बग़ैर किसी तकलीफ़ के, बग़ैर किसी अंजाम के ख़ौफ़ के। इस दुनिया में हर लज़्ज़त के साथ कोई न कोई क़ीमत जुड़ी होती है — सेहत, पैसा, वक़्त, या पछतावा। वहाँ: सिर्फ़ ख़ुशगवारी।

'इन्ना कज़ालिक नज्ज़िल्-मुह्सिनीन — बेशक हम नेकी करने वालों को यूँ ही बदला देते हैं।'

और फिर, आख़िरी बार, वही हथौड़ा: 'वैलुंय्-यौम-इज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन।' और एक तल्ख़ जुमला उन के लिए: 'कुलू व तमत्त'ऊ क़लीलन इन्नकुम मुज्रिमून — खा लो और थोड़ा सा फ़ायदा उठा लो; बेशक तुम मुजरिम हो।' बेटा, इस में जो तंज़ है वो महसूस कीजिए: चलो, ले लो, थोड़ी देर के लिए। ये एक ऐसे शख़्स की आवाज़ है जो अंजाम जानता है।

'व इज़ा क़ील लहुमुर्-क'ऊ ला यर्क'ऊन — और जब उनसे कहा जाए: रुकू करो — वो

रुकू नहीं करते।' बेटा, ये आयत बहुत बारीक है: उनका इनकार सिर्फ़ फ़लसफ़े में नहीं था; वो झुकने से इनकार था। तकब्बुर की जड़ यही है — कि मैं किसी के सामने अपना सर नहीं झुकाऊँगा।

और फिर सूरह की आख़िरी आयत, एक ऐसा सवाल जो पूरी किताब को समेट लेता है: 'फ़-बि-अय्यि हदीसिम्-ब'अदहू यु'मिनून — तो इसके बाद वो किस बात पर ईमान लाएँगे?'

बेटा, इस सवाल के साथ बैठिए। अगर ये किताब — अपनी वुज़ाहत के साथ, अपनी निशानियों के साथ, अपनी रहमत और अपनी तंबीह के साथ — किसी को क़ाइल नहीं करती, तो फिर क्या करेगा? कौन सी और किताब? कौन सा और मोजिज़ा? अल्लाह पूछ रहे हैं: और क्या बाक़ी है?

और यही सूरह का पूरा सफ़र है, बेटा: हवाओं की क़समों से शुरू हुई, दस बार बर्बादी की तंबीह दोहराई, आपके अपने जिस्म और आपके पाँव तले की ज़मीन को दलील बनाया — और आख़िर में सिर्फ़ एक सवाल छोड़ दिया, जिसका जवाब सिर्फ़ आप दे सकते हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. हर नसीहत दो में से एक है: एक रहमत जो आपको बचा ले, या एक दलील जो आपके ख़िलाफ़ पढ़ी जाए।

2. धमकी 'मुकज़्ज़िबीन' को है — जो सच को झूटा कहते हैं; गुनहगार लौट सकता है, झुठलाने वाला अपना पुल जला देता है।

3. खंडरात दलीलें हैं — देखिए उन का क्या बचा जो ख़ुद को दाइमी समझते थे।

4. ज़मीन 'किफ़ात' है: आपका फ़र्श भी और आपका आख़िरी बिस्तर भी — आप रोज़ अपने कमरे की छत पर चलते हैं।

5. हर झूटा सहारा वो साया है जो ठंडक नहीं देता — पैसा, मर्तबा, ताल्लुक़ात।

6. उस दिन बोलने की इजाज़त नहीं होगी — जो बोलने का वक़्त अभी है उसे बहानों के बजाय तौबा के लिए इस्तेमाल कीजिए।

7. 'जब कहा जाए रुकू करो तो नहीं करते' — तकब्बुर की जड़ झुकने से इनकार है; और आख़िरी सवाल यही है: इसके बाद और किस बात पर?

या अल्लाह, हमें झुठलाने वालों में से मत बनाइए, हमें झुकने वालों में रखिए, और हमें असली सायों और चश्मों की तरफ़ लौटाइए। आमीन।